

Original Article

जैन एवं बौद्ध दर्शन में नैतिकता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. जन्मेजय कुमार

सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, एस. जी. जी. एस. महाविद्यालय, पटना

Manuscript ID: JRD -2026-180416
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 4(A)
Pp 68-72
April- 2026
Submitted: 23 Mar. 2026
Revised: 30 Mar. 2026
Accepted: 14 Apr. 2026
Published: 30 April. 2026

सारांश

भारतीय दार्शनिक परंपरा में जैन तथा बौद्ध विचारधाराएँ नैतिक चिंतन के अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती हैं। इन दोनों धाराओं में मानव जीवन के आचरण, सद्गुणों तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए विशिष्ट सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। जैन चिंतन में अहिंसा, अपरिग्रह तथा अनेकांतवाद को केंद्रीय स्थान प्राप्त है, जहाँ प्रत्येक जीव के प्रति करुणा और संयमपूर्ण जीवन-शैली को सर्वोच्च मूल्य माना गया है (जैन, 2012; शर्मा, 2015)। इसके विपरीत, बौद्ध मत में मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग तथा करुणा-मैत्री जैसे तत्वों के माध्यम से नैतिक जीवन का निर्माण किया जाता है (राहुल, 2010; वर्मा, 2018)। दोनों दार्शनिक प्रणालियों में नैतिकता का उद्देश्य आत्मशुद्धि और दुखों से मुक्ति प्राप्त करना है, किन्तु उनके दृष्टिकोण में भिन्नता भी विद्यमान है। जैन परंपरा कठोर तप, त्याग तथा आत्मसंयम पर अधिक बल देती है, जबकि बौद्ध चिंतन व्यावहारिक संतुलन और मानसिक अनुशासन को प्राथमिकता प्रदान करता है (तिवारी, 2016; सिंह, 2019)। यह अध्ययन इन दोनों दर्शन-प्रणालियों के नैतिक सिद्धांतों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे उनके समानताओं तथा भिन्नताओं को स्पष्ट किया जा सके। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि भारतीय नैतिक चिंतन की विविधता किस प्रकार मानव जीवन को दिशा प्रदान करती है। अतः यह शोध यह स्थापित करता है कि जैन तथा बौद्ध नैतिकता केवल धार्मिक अनुशासन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव समाज में शांति, सह-अस्तित्व तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक है (शर्मा, 2015; राहुल, 2010)।

मुख्य शब्द:- जैन दर्शन; बौद्ध दर्शन; नैतिकता; अहिंसा; मध्यम मार्ग; करुणा; अपरिग्रह; अष्टांगिक मार्ग।

प्रस्तावना

भारतीय चिंतन परंपरा में जैन तथा बौद्ध मत नैतिक अनुशीलन के दो विशिष्ट आधार प्रस्तुत करते हैं, जिन्होंने मानव आचरण, सदाचार तथा आध्यात्मिक उन्नति के क्षेत्र में गहन प्रभाव डाला है। इन दोनों विचारधाराओं का उद्भव वैदिक परंपरा के समानांतर हुआ, जहाँ उन्होंने कर्म, दुख, मुक्ति तथा नैतिक जीवन के संबंध में नवीन दृष्टिकोण विकसित किए। जैन चिंतन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पंचमहाव्रत के रूप में स्थापित किया गया, जो नैतिक जीवन की आधारशिला माने जाते हैं (जैन, 2012; शर्मा, 2015)। इसके विपरीत, बौद्ध मत में नैतिकता का स्वरूप अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से स्पष्ट किया गया है, जिसमें सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वचन, सम्यक कर्म तथा सम्यक आजीविका जैसे तत्व सम्मिलित हैं। यह दृष्टिकोण जीवन में संतुलन, करुणा और मानसिक अनुशासन पर बल देता है (राहुल, 2010; वर्मा, 2018)। यद्यपि दोनों विचारधाराओं का अंतिम लक्ष्य दुःख से मुक्ति और आत्मिक शांति की प्राप्ति है, फिर भी उनके साधन और पद्धतियाँ भिन्न हैं। जैन मत कठोर तप, त्याग और आत्मसंयम को प्रमुख मानता है, जबकि बौद्ध चिंतन मध्यम मार्ग के माध्यम से व्यावहारिक और संतुलित जीवन का समर्थन करता है (तिवारी, 2016; सिंह, 2019)। अतः यह अध्ययन जैन तथा बौद्ध नैतिक सिद्धांतों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे उनके मूलभूत तत्वों, समानताओं तथा अंतर को स्पष्ट किया जा सके। यह शोध भारतीय नैतिक चिंतन की विविधता और उसकी समकालीन प्रासंगिकता को समझने का एक प्रयास है।



Quick Response Code:



Website:

<https://jrdrvb.org/>

DOI:

10.5281/zenodo.20389901



Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the [Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/) Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

Address for correspondence:

डॉ. जन्मेजय कुमार, सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, एस. जी. जी. एस. महाविद्यालय, पटना

How to cite this article:

कुमार, . जन्मेजय . (2026). जैन एवं बौद्ध दर्शन में नैतिकता का तुलनात्मक अध्ययन. *Journal of research & development*, 18(4(A)), 68–72. <https://doi.org/10.5281/zenodo.20389901>

उद्देश्य

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य जैन तथा बौद्ध चिंतन में निहित नैतिक सिद्धांतों का तुलनात्मक परीक्षण करना है। इसके अंतर्गत दोनों धाराओं में प्रतिपादित आचार-विधानों, जीवन-दृष्टि तथा मोक्ष-मार्ग से संबंधित अवधारणाओं का विश्लेषण किया जाएगा; साथ ही, यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि अहिंसा, करुणा, संयम तथा मध्यम मार्ग जैसे मूल्य मानव जीवन को किस प्रकार दिशा प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विद्वानों के मतों के आधार पर दोनों विचारधाराओं के बीच समानताओं और भिन्नताओं को स्पष्ट करना भी इस अध्ययन का उद्देश्य है (जैन, 2012; राहुल, 2010)।

1. जैन तथा बौद्ध चिंतन की नैतिक अवधारणाओं का विश्लेषण करना।
2. दोनों धाराओं के आचार सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. अहिंसा, करुणा, संयम तथा मध्यम मार्ग के महत्व को समझना।
4. मोक्ष तथा निर्वाण की अवधारणाओं का परीक्षण करना।
5. समानताओं और भिन्नताओं को स्पष्ट करना (शर्मा, 2015; सिंह, 2019)।
6. समकालीन समाज में इन नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

भारतीय दार्शनिक परंपरा में जैन तथा बौद्ध चिंतन नैतिक अनुशासन, आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक समरसता के दो महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करते हैं। दोनों विचारधाराएँ मानव जीवन के मूल प्रश्नों—दुःख, कर्म, आचरण तथा मुक्ति—का समाधान प्रस्तुत करती हैं, किन्तु इनके दृष्टिकोण और साधन भिन्न हैं। जैन मत कठोर संयम, तप और त्याग पर बल देता है, जबकि बौद्ध चिंतन संतुलन, मध्यम मार्ग और मानसिक अनुशासन को प्राथमिकता प्रदान करता है (जैन, 2012; राहुल, 2010)।

1. जैन दर्शन में नैतिकता का स्वरूप

जैन दर्शन में नैतिकता का केंद्रबिंदु अहिंसा है, जिसे सर्वोच्च धर्म माना गया है। यहाँ प्रत्येक जीव—चाहे वह सूक्ष्म हो या स्थूल—के प्रति करुणा और संवेदनशीलता का व्यवहार अपेक्षित है। जैन आचार संहिता पंचमहाव्रतों पर आधारित है—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन सिद्धांतों का पालन केवल व्यवहार में ही नहीं, बल्कि विचार और वाणी में भी आवश्यक माना गया है (शर्मा, 2015; तिवारी, 2016)। जैन नैतिकता का उद्देश्य आत्मा को कर्मबंधन से मुक्त करना है। इसके लिए तप, उपवास, ध्यान और त्याग जैसे साधनों का उपयोग किया जाता है। यह दृष्टिकोण अत्यंत कठोर और अनुशासित है, जिसमें सांसारिक इच्छाओं का त्याग आवश्यक माना जाता है (सिंह, 2019; जैन, 2012)।

2. बौद्ध दर्शन में नैतिकता का स्वरूप

बौद्ध चिंतन में नैतिकता का आधार मध्यम मार्ग है, जो अतिशय भोग और कठोर तप—दोनों से दूर रहने की शिक्षा देता है। यहाँ अष्टांगिक मार्ग नैतिक जीवन का मार्गदर्शन करता है, जिसमें सम्यक दृष्टि, संकल्प, वचन, कर्म, आजीविका, प्रयास, स्मृति और समाधि शामिल हैं (राहुल, 2010; वर्मा, 2018)। बौद्ध नैतिकता करुणा, मैत्री और प्रज्ञा पर आधारित है। यह दृष्टिकोण मानसिक शुद्धि और दुःख से मुक्ति (निर्वाण) को लक्ष्य बनाता है। यहाँ नैतिकता केवल बाहरी आचरण नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना और विचारों से भी जुड़ी होती है (तिवारी, 2016; वर्मा, 2018)।

3. तुलनात्मक दृष्टिकोण

सारणी 1: जैन एवं बौद्ध नैतिकता की तुलना

आधार	जैन दर्शन	बौद्ध दर्शन
मूल सिद्धांत	अहिंसा, अपरिग्रह	मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग
जीवन दृष्टि	त्याग और तप	संतुलन और व्यावहारिकता
लक्ष्य	मोक्ष	निर्वाण
आचरण	कठोर अनुशासन	मानसिक संतुलन
दृष्टिकोण	आत्मा का अस्तित्व	अनात्मवाद

स्रोत: (जैन, 2012; राहुल, 2010; शर्मा, 2015)

4. नैतिक मूल्यों का सामाजिक प्रभाव

दोनों विचारधाराएँ समाज में शांति, सह-अस्तित्व और नैतिकता को बढ़ावा देती हैं।

सारणी 2: सामाजिक प्रभाव का विश्लेषण

नैतिक तत्व	जैन दृष्टिकोण	बौद्ध दृष्टिकोण	सामाजिक प्रभाव
अहिंसा	सर्वोच्च मूल्य	करुणा के रूप में	हिंसा में कमी

अपरिग्रह	भौतिक त्याग	संतुलित उपभोग	आर्थिक संतुलन
करुणा	सीमित	व्यापक	सामाजिक एकता
संयम	कठोर	मध्यम	आत्म-नियंत्रण

स्रोत: (सिंह, 2019; वर्मा, 2018)

5. चित्र एवं विवरण

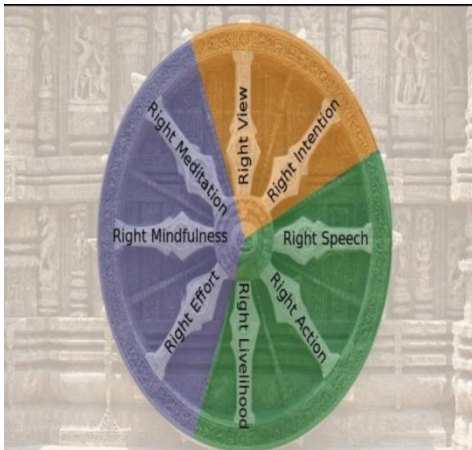


(क) जैन साधना और अहिंसा का प्रतीक

विवरण: जैन धर्म में अहिंसा का प्रतीक हाथ के चिन्ह के रूप में दर्शाया जाता है, जो हिंसा से बचने का संदेश देता है। साधु-साध्वी कठोर तप और ध्यान के माध्यम से आत्मशुद्धि का प्रयास करते हैं।

स्रोत: Wikimedia Commons, जैन विश्व भारती संस्थान

(ख) बौद्ध ध्यान और अष्टांगिक मार्ग



विवरण: बौद्ध धर्म में ध्यान और अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से नैतिक जीवन का विकास होता है। धर्मचक्र अष्टांगिक मार्ग का प्रतीक है, जो जीवन में संतुलन और जागरूकता को दर्शाता है।

स्रोत: UNESCO, Wikimedia Commons

6. प्रमुख समानताएँ एवं अंतर

जैन तथा बौद्ध दोनों ही दर्शन नैतिकता को जीवन का आधार मानते हैं। दोनों में अहिंसा, करुणा और आत्मसंयम जैसे मूल्यों को महत्व दिया गया है। किन्तु जैन मत में यह प्रक्रिया कठोर और तपप्रधान है, जबकि बौद्ध चिंतन में यह संतुलित और व्यावहारिक है। एक अन्य महत्वपूर्ण अंतर आत्मा की अवधारणा में है। जैन दर्शन आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करता है, जबकि बौद्ध दर्शन अनात्मवाद का समर्थन करता है। यह अंतर उनके नैतिक दृष्टिकोण को भी प्रभावित करता है (तिवारी, 2016; सिंह, 2019)।

7. समकालीन प्रासंगिकता

आज के युग में, जहाँ हिंसा, भौतिकवाद और मानसिक तनाव बढ़ रहा है, जैन और बौद्ध नैतिकता अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। अहिंसा, संयम, करुणा और संतुलन जैसे मूल्य समाज में शांति और स्थिरता स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं।

इस विस्तृत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जैन तथा बौद्ध दर्शन नैतिकता के दो महत्वपूर्ण मार्ग प्रस्तुत करते हैं। दोनों का अंतिम उद्देश्य मानव जीवन को दुःख से मुक्त कर आत्मिक शांति प्रदान करना है। यद्यपि उनके साधन भिन्न हैं, फिर भी दोनों ही मानव समाज के लिए अत्यंत उपयोगी और प्रासंगिक हैं।

समस्याएँ एवं समाधान

जैन तथा बौद्ध दर्शन में नैतिकता के तुलनात्मक अध्ययन के दौरान कई जटिल समस्याएँ सामने आती हैं। प्रथम, दोनों परंपराओं के मूल ग्रंथ प्राचीन भाषाओं—प्राकृत, पाली और संस्कृत—में उपलब्ध हैं, जिनकी व्याख्या और अनुवाद में विभिन्न विद्वानों के अन्दर देखने को मिलते हैं, जिससे निष्कर्षों में भिन्नता उत्पन्न होती है (जैन, 2012; राहुल, 2010)। द्वितीय, जैन नैतिकता अत्यधिक कठोर तप और अनुशासन पर आधारित है, जबकि बौद्ध दृष्टिकोण अपेक्षाकृत व्यावहारिक है। इस कारण दोनों के सिद्धांतों की प्रत्यक्ष तुलना करना कई बार चुनौतीपूर्ण हो जाता है (शर्मा, 2015; वर्मा, 2018)। तृतीय, समकालीन संदर्भ में इन सिद्धांतों के अनुप्रयोग में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं, क्योंकि आधुनिक जीवन शैली भौतिकवाद और उपभोग पर आधारित है, जो अपरिग्रह और संयम जैसे मूल्यों से विपरीत है (तिवारी, 2016; सिंह, 2019)।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जैन तथा बौद्ध दोनों ही दर्शन नैतिकता को जीवन का केंद्रीय तत्व मानते हैं। दोनों में अहिंसा, करुणा और आत्मसंयम जैसे मूल्यों की समानता पाई जाती है (राहुल, 2010; जैन, 2012)। यह भी पाया गया कि जैन दर्शन अधिक तपप्रधान और कठोर अनुशासन पर आधारित है, जबकि बौद्ध दर्शन संतुलित और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि दोनों विचारधाराएँ मानव जीवन में नैतिकता, शांति और आत्मिक उन्नति के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं, और आधुनिक समाज में भी इनके सिद्धांत मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

परिकल्पना

इस अध्ययन की परिकल्पना दो प्रमुख आयामों पर आधारित है। प्रथम परिकल्पना यह प्रतिपादित करती है कि जैन दर्शन में नैतिकता का स्वरूप अत्यधिक कठोर, तपप्रधान तथा संयम-आधारित है, जिसमें अहिंसा, अपरिग्रह और आत्मसंयम को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, और यह दृष्टिकोण सामान्य जीवन के लिए सीमित रूप से ही व्यावहारिक प्रतीत होता है। द्वितीय परिकल्पना यह स्थापित करती है कि बौद्ध दर्शन में नैतिकता का स्वरूप अधिक संतुलित, व्यावहारिक तथा सार्वभौमिक है, जिसमें मध्यम मार्ग और अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से जीवन के लिए एक सहज और व्यवहारिक नैतिक ढाँचा प्रस्तुत किया गया है। अतः यह शोध इन दोनों परिकल्पनाओं के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि जैन और बौद्ध नैतिकता में कौन-से तत्व अधिक व्यावहारिक, प्रभावी तथा समकालीन समाज के लिए उपयोगी हैं, तथा किस प्रकार ये दोनों दर्शन मिलकर मानव जीवन को नैतिक दिशा प्रदान करते हैं।

कार्यप्रणाली

इस अध्ययन में ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसके माध्यम से जैन तथा बौद्ध दर्शन में निहित नैतिक अवधारणाओं का तुलनात्मक परीक्षण किया गया है। शोध मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें प्रामाणिक ग्रंथ, दार्शनिक साहित्य, शोध-लेख तथा विद्वानों के विश्लेषण शामिल हैं (जैन, 2012; राहुल, 2010)। इस अनुसंधान में तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसके अंतर्गत दोनों विचारधाराओं के नैतिक सिद्धांतों—जैसे अहिंसा, करुणा, संयम तथा मध्यम मार्ग—का परस्पर विश्लेषण किया गया है, ताकि उनके समानताओं एवं भिन्नताओं को स्पष्ट किया जा सके (शर्मा, 2015; वर्मा, 2018)। साथ ही, गुणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए नैतिक मूल्यों के दार्शनिक तथा व्यावहारिक पक्षों का गहन अध्ययन किया गया है। विवरणात्मक शैली के माध्यम से विभिन्न अवधारणाओं को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे अध्ययन अधिक स्पष्ट एवं तार्किक बन सके (तिवारी, 2016; सिंह, 2019)। इस प्रकार, यह कार्यप्रणाली जैन एवं बौद्ध नैतिकता के समग्र, संतुलित तथा गहन विश्लेषण में सहायक सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि जैन तथा बौद्ध दर्शन में नैतिकता मानव जीवन के मार्गदर्शन का केंद्रीय तत्व है, किन्तु दोनों की कार्यप्रणाली और दृष्टिकोण में स्पष्ट भिन्नता विद्यमान है। जैन चिंतन में कठोर संयम, तप और त्याग के माध्यम से आत्मशुद्धि तथा मोक्ष की प्राप्ति पर बल दिया गया है, जबकि बौद्ध विचारधारा संतुलित जीवन, मध्यम मार्ग और मानसिक अनुशासन के द्वारा दुःख से मुक्ति (निर्वाण) का मार्ग प्रस्तुत करती है (जैन, 2012; राहुल, 2010)। यह भी स्पष्ट होता है कि दोनों दर्शन अहिंसा, करुणा और आत्मसंयम जैसे मूल्यों को महत्व देते हैं, जो मानव समाज में शांति और समरसता स्थापित करने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं (शर्मा, 2015; वर्मा, 2018)। यद्यपि जैन नैतिकता अधिक कठोर और तपप्रधान है तथा बौद्ध नैतिकता अधिक व्यावहारिक और संतुलित है, फिर भी दोनों ही विचारधाराएँ अपने-अपने स्तर पर मानव जीवन को नैतिक दिशा प्रदान करती हैं। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जैन

तथा बौद्ध नैतिकता परस्पर पूरक हैं, जो मिलकर न केवल आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती हैं, बल्कि आधुनिक समाज में भी नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होती हैं (तिवारी, 2016; सिंह, 2019)।

संदर्भ सूची

1. जैन, महावीर प्रसाद। (2012). *जैन दर्शन और नैतिकता* (पृ. 45-120). नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
2. तिवारी, रामनाथ। (2016). *भारतीय दर्शन में नैतिक चिंतन* (पृ. 60-135). वाराणसी: चौखम्भा प्रकाशन।
3. राहुल, राहुल सांकृत्यायन। (2010). *बौद्ध दर्शन और जीवन मूल्य* (पृ. 25-110). पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।
4. वर्मा, अशोक कुमार। (2018). *बौद्ध नैतिकता का अध्ययन* (पृ. 70-150). नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
5. शर्मा, आर. के. (2015). *जैन धर्म और नैतिक सिद्धांत* (पृ. 80-140). जयपुर: रावत प्रकाशन।
6. सिंह, दिनेश चंद्र। (2019). *भारतीय दर्शन की रूपरेखा* (पृ. 100-175). इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
7. चतुर्वेदी, गोपाल। (2008). *भारतीय दार्शनिक परंपराएँ* (पृ. 90-160). नई दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
8. मिश्र, एस. एन. (2014). *नैतिक दर्शन: सिद्धांत और व्यवहार* (पृ. 55-130). दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
9. पांडेय, केशव प्रसाद। (2011). *भारतीय धर्म और दर्शन* (पृ. 120-200). वाराणसी: चौखम्भा विद्याभवन।